श्री राजन स्वामी जी द्वारा की गयी चर्चा के कुछ अंश

प्राणों के आधार श्री सुन्दसाथ जी एवं धर्म प्रेमी सज्जनो, इस सृष्टि के अन्दर कोई भी प्राणी अपना बुरा नहीं चाहता। हर कोई यही चाहता है कि मै उस परम सत्य को जान लूं, उस पारब्रह्म अक्षरातीत की भक्ति करके मै भी इस भवसागर के दुखों से पार हो जाऊं क्योंकि वह जानता है कि विषयों के भोग से कभी विषयों की तृष्णा समाप्त नहीं होती है, जिस तरह से अग्नि में घी डालने के पश्चात अग्नि की लपटें और तेज होती जाती हैं, वैसे ही मानव जैसे-जैसे विषयों का भोग करता है उसकी कामना बढ़ती जाती है क्योंकि चित्त में विषयों का संस्कार और बढ़ता जाता है और चित्त में विषयो के संस्कार उसके मन को और विषय भोग के लिए प्रेरित करते है और यह श्रंखला कभी भी टूटती नही। यह श्रंखला तब टूटे जब उसके अन्दर विवेक दृष्टि जागृत हो, विवेक दृष्टि भी तब जागृत हो जब उसके अन्दर ब्रह्म ज्ञान की कुछ किरणें प्रवेश करें अन्यथा सारा संसार जो खाने पीने में, संसारिक सुखों में अपने जीवन की तृप्ति समझता है उससे यह आशा करना कि वो परम तत्व को यर्थाथ रूप से ग्रहण कर पायेगा यह भूल के समान होता है। संसार में कोई विरला ही पुरूष होता है जो उस पारब्रह्म के आनन्द को जानने के लिए प्रयासरत रहता है।

क्षर से परे है अक्षर, अक्षर से परे है अक्षरातीत और उस अक्षरातीत को पाने के लिए हमें संशय रहित होना पड़ेगा। संशय रहित हुए बिना उस अक्षरातीत पारब्रह्म के चरण कमलों का सानिध्य भी भला कैसे प्राप्त हो सकता है। लेकिन संशय की दीवारों को नष्ट करने वाली चीज़ है वो विशुद्ध ज्ञान, जब तक तारतम ज्ञान की ज्वाला हमारे हृदय में प्रज्जवलित न हो, हम जान ही नहीं सकते, पारबह्म सच्चिदानंद है कहाँ, कैसा है और करता क्या है, सारा संसार यह जानता है कि पारब्रह्म सर्वशक्तिमान है, सकल गुण निदान है अनतं आनन्द का सागर है, अनन्त प्रेम का सागर है लेकिन यदि वो ऐसा है तो है कहाँ? सारा संसार यह मानने के लिए मजबूर हो जाता है कि चराचर जो कुछ दिख रहा है, सब कुछ ब्रह्म रूप ही है, ब्रह्म रूप तो अवश्य है। पारब्रह्म का धाम, यह जगत स्वपन वत् है, जिस तरह रेगिस्तान के अन्दर सूर्य की धूप पड़ती है तो दूर से देखने में लगता है कि वहाँ जल का एक तालाब सा है। वहाँ जाकर के देखते है तो तालाब तो दिखाई नहीं देता केवल बालू की रेत ही रेत दिखाई देती है, इसको कहते है मृगतृष्णा का जल, यानि कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह से मृगतृष्णा का जल मिथ्या होता है, खरगोश के सींग नहीं होते, आकाश का फूल नहीं होता, बंझा के पुत्र का विवाह नहीं हो सकता उसी प्रकार यह जगत यथार्थ

Nijanand App

रूप से नहीं है लेकिन लग रहा है, कब तक जब तक अज्ञानता की दृष्टि हमारी बनी हुई है, यह सारा संसार स्वपना है लेकिन सपना किस प्रकार का, सपने का मूल कहाँ से है, यह हमें विचारना पड़ेगा यदि सपना है तो ब्रह्मरूप किस प्रकार, जबकि ब्राह्मण ग्रन्थों का कथन है सर्वम् खल्विंदब्रह्म। सब कुछ बह्म ही ब्रह्म है। यदि सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म है तो फिर स्वपनवत जगत की कल्पना कैसे आ जाती है हमारे अन्दर अज्ञानता का प्रवेश क्यों होता है,हमारे अन्दर मायावी विषय विकार क्यों बने रहते है। हम उस सर्वज्ञ ब्रह्म से यदि युक्त हैं तो उस ब्रह्म को जानने की हम चेष्टा क्यों करते हैं, क्या ब्रह्म के हमारे अन्दर विराजमान रहने के बाद भी हमारे अन्दर अज्ञानता हो सकती है। यदि वो पारब्रह्म हमारे अन्दर बैठा है तो हम किसकी खोज करते हैं। हम मायावी विषयों से पद दलित होकर चौरासी लाख योनियों में हमारा जीव क्यों भटक रहा है। सृष्टि उत्पन्न क्यों होती है फिर महाप्रलय में लय क्यों होती है यह गहन जिज्ञासा का विषय होता है। यह सृष्टि जो स्वपन में दिख रही है आदिनारायण का मात्र संकल्प है। आदिनारायण वो है, इस मोहसागर के अन्दर जो अव्याकृत पुरूष जो अक्षर ब्रह्म के मन का स्वरूप है वो स्वपनवत प्रतिबिम्बित होकर आदिनारायण का रूप लेता है और आदि नारायण के अन्दर "एको अहम् बहुस्याम्" की कल्पना होती है और उसके परिणाम यह कार्यरूप जगत दिख पड़ता है। और इस जगत के अन्दर ज्ञानी ध्यानी, ऋषि मुनि उत्पन्न होते हैं, वे उस परमतत्व को जानना चाहते है जिसके बारे में वेद ने कहा है - यस्तत्- वेद किम् ऋचा करिष्यति य इत् विदुः ते स समासते।

जिस अविनाशी ब्रह्म की सत्ता में यह सारा जगत प्रतिष्ठित है, यदि उस वेद के द्वारा उस सच्चिदानंद पारब्रह्म को नहीं जाने तो केवल वेद की ऋचाओं के पठन पाठन से क्या होगा। वेद का तात्पर्य क्या है, उस अविनाशी ब्रह्म को जानो जिसके बारे में गीता भी कहती है कि 'यद अक्षरं ब्रहम वदोवदन्ति' वेद को जानने वाले जिस अविनाशी ब्रह्म का विश्लेषण करते है, अविनाशी ब्रह्म है कहाँ, कैसा है। लेकिन संसार तो इसके जानने का प्रयास तब करेगा जब इसके पास सात्विकता हो। मनुष्य के अन्दर जब तक सतोगुणी बुद्धि नहीं होती, वो सत्य को जानने के लिए विशेष रूप से प्रयास नहीं करता, रजो गुण से अक्रांत व्यक्ति कर्म में, राग में, द्वेष में फँसा रहता है। तमो गुण के अन्दर मनुष्य के ऊपर इतना अन्धकार छा जाता है कि वो सोच ही नहीं पाता कि मैं कौन हूँ इसीलिए गीता कहती है कि जो सतोगुणी प्राणी होते है वह उन्नति की तरफ चलते है, जो रजो गुणी होते हैं यह बीच में बने रहते है और जो तमो गुणी प्राणी होते हैं वे अज्ञानता के अन्धकार में डूबते रहते हैं। मनुष्य को रजो गुणी माना जाता है देवता सतोगुणी माने जाते है और असुर तमो गुणी माने जाते है यह तीनों गुणों का सम्बंध भी ब्रह्म की प्राप्ति में बाधक बनता है इसलिए अर्जुन से भी कृष्ण ने कहा कि हे अर्जुन तुम त्रिगुणातीत मार्ग का अवलंबन करो वो त्रिगुणातीत मार्ग जिसमें कोई भी मायावी बन्धन नहीं है प्रश्न यह होता है कि कैसे हम उस सच्चिदानंद पारब्रहम को जाने जो तीनों

गुणों के बन्धन में कभी भी नहीं आता और जो मन से, वाणी से चित्त से, बुद्धि से सर्वथा पृथक है। उस पारब्रहम सच्चिदानंद की खोज करते हुए एक बार पंचदेव यानि ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ईश्वर और सदाशिव ध्यान में आते हैं, उनको एहसास होता है कि ब्रह्मा के धाम से पूर्व कितनी शक्तियाँ उनको रोकती है। रोधिनी शक्ति प्रकट होती है और कहती है कि मैने तो यह पहली बार देखा है कि कोई इस संसार से परे हो कर उस अखंड ब्रहम को जानने के लिए इस संसार से परे जा रहा है और मेरा कार्य है कि मैं किसी को भी निराकार के बन्धन से आगे नहीं जाने देती हूँ क्योंकि यह सारा जगत स्वप्नवत है। आकाश में सूर्य चमकता है उसका प्रतिबिम्ब जल में पड़ता है तो जल वाला सूर्य आकाश वाले सूर्य के पास नहीं जा सकता क्योंकि वो प्रतिबिम्ब रूप है। इसी प्रकार प्राणियों के अन्दर जो अन्तःकरण है उसमें आदि नारायण की चेतना का जो प्रतिभास पड़ रहा है वही जीव कहला रहा है, वो जीव निराकार के पार के पार उस अविनाशी सच्चिदानंद पारब्रहम को प्राप्ति कैसे करें। नचिकेता यमराज के पास जाते है, जब वो जाते है तो यमराज कहीं बाहर गए थे, उनके दरवाजे पर तीन दिन तक पड़े रहते हैं ब्रहम ज्ञान की जिज्ञासा के लिए। जब यमाचार्य आते है, कहते है कि हे बालक तूने मेरे दरवाजे पर तीन दिन तक प्रतीक्षा की इसलिए तुम तीन वर मांगो। नचिकेता पहला वर क्या माँगते है कि मेरे पिता मेरे से खुश हो जायें, दूसरे वर से उसने स्वर्ग सुख का साधन मांगा, तीसरा वर जब माँगता है कि मुझे आत्म तत्व का ज्ञान चाहिए। जन्म मरण से परे उस सच्चिदानंद परमात्मा का ज्ञान दीजिए जिसको जानने के बाद मेरा जीव इस भवसागर से पार हो जाय। यमाचार्य कहते है कि हे नचिकेता तुम अप्सराओं के समान सुन्दर कन्या माँग लो, पृथ्वी का राज्य माँग लो, लेकिन यह ब्रहम तत्व को मेरे से न पूछो, नचिकेता कहता है कि हे यमाचार्य, जो सुख आप मुझे देना चाहते है वह नश्वर है। माया के सुखो से कभी भी जीव की तृप्ति नहीं हो पाती है और इन्द्रियों का तेज क्षीण हो जाता है। मुझे तो केवल ब्रहम तत्व ही चाहिए जिसको जानना ही मेरे जीवन का अंतिम लक्ष्य है। यह विडम्बना ही है कि जिस ब्रहम ज्ञान के द्वारा जीव भव सागर से पार होता है उस ज्ञान को सुनने वाला और सुनाने वाला कोई विरला ही होता है। नचिकेता और यमाचार्य, अर्जुन और कृष्ण कोई विरला ही होता है। लेकिन जब यमराज प्रबोध देते है कि हे नचिकेता तुम्हारी जिज्ञासा को देखकर मैं उस ब्रहम तत्व का उपदेश कर रहा हूँ कि वो ब्रहम तत्व है क्या, जिसको सुनने के लिए हर कोई जिज्ञासु तो होता है लेकिन सुनते हुए भी श्रृण्वन्तोऽपि बदृवो यं न विदुः बहुतेरे इसको जान नहीं पाते है कि वो पारब्रहम सच्चिदानंद है कहां। आज सारा संसार स्तुति करता है, भेष, भाषा के झगड़ों में सारा संसार हजारों पंथो में बटा हुआ है, हर पंथ अपने ईष्ट को, अपनी उपासना पद्धती को सत्य कहता है ऐसी स्थिति में यह निर्णय करना कि पारब्रहम हम किसको माने, जिसकी भक्ति करें, जिसको जानने से जीव भवसागर से पार हो जाय और उस पारब्रहम की खोज में सभी लगे रहें। "सो तेता ही बोलिया

Nijanand App

जो गया जहां लो चल, अपने-अपने मुख से ब्यां करी मंजिल" जिसने पारब्रहम को जितना जाना उतना ही कहा, उससे ज्यादा करने की सार्मथ्य मानवी बुद्धि में नहीं आती जैसे छः व्यक्ति गए जो आँखों से अन्धे थे उन्होंने हाथी के रूप की व्याख्या करनी शुरू की, सब को नेत्र दृष्टि तो है नही, हाथ से छू कर ही अंदाज लगा सकते हैं। किसी ने उसकी पूंछ को छुआ यह कहा, हाथी रस्सी जैसा होता है, किसी ने उसके पाँव को हाथ लगाया तो यह कहा कि हाथी खम्भे जैसा होता है, किसी ने पीठ पर हाथ रखा तो यह कहा कि हाथी छत जैसा होता है। किसी ने सूंड़ को छूकर कहा कि हाथी सर्प जैसा होता है, सभी बातें सच कह रहे है लेकिन हाथी के एक-एक रूप की व्याख्या कर रहे है, उसके पूरे स्वरूप की व्याख्या नही। उसी प्रकार पारब्रहम कहां है, कैसा है यह गहन जिज्ञासा का विषय होता है वो साकार है या निराकार, इस जगत के कण-कण में व्यापक है या इस जगत से सर्वथा परे हैं, यह अध्यात्म की सबसे बड़ी तथ्यता है जिसको जाने बिना हम अन्तिम लक्ष्य तक नही पहुँच सकते। श्री प्राणनाथ जी ने संसार के ज्ञानी जनों को यह प्रबोध दिया कि ऐ ज्ञानीजनों यह न समझना कि मैं विवाद के कारण कह रहा हूँ, मैं जिज्ञासु के रूप में तुमसे यह प्रश्न करता हूँ "कोई कहे एह भ्रम की बाजी, ज्यो खेलत कबूतर, तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर"। आप कहते हो कि यह सारा संसार भ्रम का रूप है और उसके अधीन कबूतर होते है, जिसके द्वारा वो खेल कराता है तो बाजीगर परमात्मा है और कबूतर उसका जीव है तो भला कबूतर को यदि बाजीगर का पता नही होता तो जीव उस पारब्रहम का पता कैसे पा लेगा क्योंकि वो तो खुद अपने को नही जानता और जब तक उस सच्चिदानंद पारब्रहम का बोध न हो कि सच्चिदानंद पारब्रहम है कहाँ कैसा है, तब तक अपने स्वरूप का बोध भी किसी को हो नही पाता कि मैं कौन हुँ, कहाँ से आया हूँ इस तन को छोड़ने के बाद जाना कहाँ है। सारा संसार सर्वम् खल्विदं ब्रहम् तो कहता है लेकिन वो ब्रहम है कहाँ यदि सारा ब्रहम का रूप है तो हमें खोज करने की आवश्यकता क्या। ब्रहम सर्व शक्तिमान है, सकल गुण निदान है, सारे ज्ञान का प्रकाशक है, सारे आनन्द का स्त्रोत है। फिर वो है कहाँ इसके लिए हमे तात्विक दृष्टि से देखना पड़ेगा। सूक्ष्म दृष्टि से इस पर विचार करना पड़ेगा। नचकेता से यमाचार्य कहते है कि हे नचकेता

ऋतम् पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्ठौ परमे पराधे।
छायातपो ब्रहमविदो वदन्ति पंचाग्नयो ये त्रिणाचिकेता।।

नचकेता! पारब्रहम का स्वरूप और जगत का स्वरूप वैसे ही होता है जैसे धूप और छाया का सम्बंध होता है, जहाँ धूप है वहाँ छाया नहीं जहाँ छाया है वहाँ धूप नहीं। जहाँ सूरज है वहाँ अन्धेरा नहीं जहाँ अन्धेरा है वहाँ सूरज नहीं हो सकता। संसार कहता है कि अन्धेरे के कण कण में सूरज व्यापक होकर बैठा और सूरज के अन्दर अन्धेरा बैठा है यही भूल है। "काल आवत कबूं ब्रहम भवन में, तुम क्यों न विचारो सोई।

Nijanand App

अखण्ड सांई जो यामें होती तो भंग ब्रह्माण्ड को न होई।

पारब्रहम सच्चिदानंद अखण्ड है, अविनाशी है। हमारे शरीर में जीव स्थित है यह जीव, बाल की नोक के दस हजारवें टुकड़े किए जाए, उससे भी छोटा यह जीव है। जब वो शरीर के अन्दर रहता है तो यह हाथी का शरीर हो चाहे शार्क मछली का हो, चाहे व्हेल का हो या छः फुट वाले इंसान का शरीर हो वो चेतन रहता है। जब वो छोटा सा जीव, जो बाल के दस हजारवें हिस्से से भी छोटा है शरीर से बाहर निकलते ही शरीर मुरदार हो जाता है। तो बालाग्रशतभागस्य शतिधा कल्पितस्य च विज्ञेयो स अणुः आत्मा। (श्वेताश्वतरोपनिषद)

जो चेतनो का भी चेतन एक अविनाशी पारब्रहम है, यदि वो संसार में एक रस व्यापक है तो जड़ नाम की कोई वस्तु होनी ही नहीं चाहिए। ब्रह्म व्यापक अवश्य है लेकिन कहाँ, जहाँ उसका निजधाम है, जहाँ सूरज नहीं चमकता, जहाँ विद्युत नही, जहाँ अग्नि नहीं। इसलिए उपनिषदों के अन्दर कहा गया है।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकम् न ईमा विद्युतोयान्ति कुतोऽयभग्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वामिदम् विभाति।। (कठोपनिषद)

जो ब्रह्म का धाम है जिसके कण कण में ब्रह्म का स्वरूप है वहाँ सूरज नहीं चमकता, वहाँ अग्नि नहीं, वहाँ विद्युत का प्रकाश नहीं है। उस ब्रह्म के प्रकाश से ही सारा ब्रह्मधाम प्रकाशित होता है और वहाँ के कण कण में पारब्रह्म का स्वरूप है। इस जगत के कण कण में माया का स्वरूप है। अन्धेरा और उजाला एक जगह नहीं रह सकते, अन्धेरे में उजाला व्यापक नही हो सकता और उजाले के अन्दर अन्धेरा व्यापक नहीं हो सकता। दोनो ही विपरीत गुण वाले है इसलिए सामवेद के एक मन्त्र में कहा गया है

शुक्रं ते अन्यत् यजतं अहनि द्यौ इव असि।

हे परमात्मा जो तेरा नूरमयी स्वरूप है वो दूसरा ही है और जगत का यह जो स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है वो दूसरा ही स्वरूप है। पारब्रह्म का स्वरूप है त्रिगुणातीत और जगत का स्वरूप है त्रिगुणात्मक। दोनो में मेल कैसे हो सकता है। इसलिए अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने अपनी वाणी से सबको समझाया है, भाई रे ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म दिखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या।

ए. संसार सकल है सपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या ।।

जब यह सारा संसार सपने का रूप है, तो तुम पारब्रह्म को इस जगत के कण कण में कैसे व्यापक मानते हो क्योंकि जहाँ पारब्रह्म है वहाँ काल की सत्ता नहीं हो सकती। पारब्रह्म जित रहत है तित आवे नहीं काल उत्पन्न सब होसी फना, ए तो पाँचो ही पंपाल" पाँच तत्व का यह जगत दिख रहा है और यह प्रलय में नष्ट हो जायेगा। ऐसे जगत के कण कण में जो सच्चिदानंद पारब्रह्म है उसका स्वरूप कैसे व्यापक माना जा सकता है।

Nijanand App